Page No.:
Date: / /

Dr. Keerti Kumar
Asstt Prof. (Guest)
S.R.A.P. College, Barachakia
(A Constituent unit of B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur)

Subject Psychology
Class - B.A. Part I (Hon)
Topic — Learning
Day - Friday
Date - 03/02/2023
Period - 3rd
Contact No - 9801466117/6202215708

सीखने का स्वरूप
Nature of Learning -

मनुष्य एक चेतनशील प्राणी है इसमें लगातार अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखता ही रहता है, जबतक जीवन है तबतक सीखना है जीवन के किसी भी क्षेत्र में बिना सीखे काम नहीं चल पाता है। खासकर शिक्षा के क्षेत्र में तो यह व्यापक रूप से अर्थ रखता है। अर्थात सीखना एक मानसिक प्रक्रिया है और इस मानसिक क्रिया की अभिव्यक्ति मनुष्य के व्यवहार के सहारे होती है। कभी भी हम किसी बात को सीखते हैं तो उसका प्रभाव हमारे व्यवहार पर दिखाई पड़ने लगता है। हमारे व्यवहार में परिवर्तन या परिमार्जन होने लगता है। जैसे कोई बच्चा आग से जलता हुआ लकड़ी छूता है और उसके हाथ जल जाता है तो वह उस रूप में सीखता है और पुनः वह आग छूना नहीं चाहता है।

यहाँ आग छूना, आग से हाथ जलना, पुनः आग नहीं छूना — इस प्रकार यहाँ यह देखा गया था बच्चा आग के पास जाना नहीं चाहेगा क्योंकि उसका हाथ आग से जल गया है। अतः वह कभी भी आग नहीं छू पाएगा उसने सीखा और उसके मानसिक पटल में आ गया है कि आग से हाथ जल जाएगा।

मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन अन्य कारणों से होता है जैसे शारीरिक मकावट, मानसिक परेशानी आदि।

अतः मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की एक परिभाषा दी है :-

"सीखने में जो परिवर्तन होता है वह अनुभव पर आधारित होता है और उसके समायोजन में सहायता मिलती है।"

अतः इसी बात को मार्गन & डिलिलैण्ड ने अपनी परिभाषा को अपने शब्दों में व्यक्त किया है।

"सीखना अनुभव के परिणाम स्वरूप जीव के व्यवहार में कुछ परिमार्जन है जो कम-से कम कुछ समय के लिए भी जीव द्वारा धारण किया जाता है।" "Learning, as we measure it, is a relatively permanent the current motivating conditions of the individual"

इन परिभाषाओं कुछ बातें समान और कुछ बातें भिन्न हैं फिर भी इस परिभाषा को विश्लेषण किया जाए तो सीखने की प्रक्रिया की विशेषताएँ बताया जा सकता है